विषय - संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र डॉ॰ओम प्रकाश आर्य
किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग, महाराजा कॉलेज, आरा
पद्यांश व्याख्या दिनांक - 09/09/2020

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः
स वेद निःशेषमशेषितक्रियः ।
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धिभिः
प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः ॥20॥

अन्वयः - अशेषितक्रियः सः सच्चरितैः चरैः महीभृतां क्रियाः निःशेषं वेद । धातुः इव

Date ___/___/______

Page No.: ________

तस्य ईहितं महोदयैः हितानुबन्धिभिः फलैः प्रतीयते

भावार्थ- सुयोधन अपने अधीन राजाओं के आचरण के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेता है और उसकी योजनाओं में इतनी गोपनीयता होती है कि उनके क्रियान्वित होने पर ही लोगों को पता चलता है।

भाषार्थ- (अशेषितक्रियः सः) सभी कार्यों को पूरी तरह समाप्त करके वह सुयोधन (सच्चरितैः चरैः) उत्तम चरित्र वाले गुप्तचरों के द्वारा (अधीन) (महीभृतां क्रियाः) राजाओं के सभी व्यवहारों को ~~क्क~~ (निःशेषं वेद) सम्पूर्ण रूप से जानता है। (धातुः इव तस्य) विधाता की इच्छा की तरह उसकी योजना (ईहितम्) मन्तव्य (महोदयैः हितानुबन्धिभिः फलैः) अत्यन्त समृद्धिवाले एवं कल्याणकारी परिणामों के द्वारा ही (प्रतीयते) जानी जाती है।

पदव्याख्या- महीभृताम = महीं बिभृतीति महीभृतः, तेषां महीभृताम, मही + भृ + क्विप् (कर्त्तरि) (उपपद तत्पु०) सच्चरितैः चरैः = सत् चरितं येषां ते सच्चरिताः, तैः (बहु०) । सत् + अस् + शतृ । चरितम = चर् + क्त (भावे) । क्रियाः = कार्य, व्यवहार अशेषितक्रियः = सभी कार्यों को पूरा करनेवाला, न शेषिताः अशेषिताः, अशेषिताः क्रियाः येन सः अशेषितक्रियः (नञ् तथा बहु०)। शेषित = शेषयति से भूतकालीन क्त, शेषयति का अर्थ है 'शेषं करोति'। शिष + णिच् + क्त । सः निःशेषं वेद = वह सम्पूर्ण रूप में जानता है। निर्गतः शेषं यस्मिन कर्मणि तद्यथा तथा, जिसमें कुछ भी

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough."—Rabindranath Tagor

Scanned with CamScanner

Date ___/___/______ Page No.: ______

शेष नहीं रह गया है, अर्थात् पूर्णरूप से। शेषः - शिष् + घञ्। वेद - विद् + लट्, 'विदो लटो वा' सूत्र से 'ति' के स्थान पर णल् - अ हो गया। महोदयैः = उत्तम परिणाम वाले, महान् उदयो येषां, येभ्यः वा (बहु०)। तैः उदयः - उत् + इ + अच् (भावार्थक)। हितानुबन्धिभिः = हित करनेवाले, हितमनुबध्नन्तीति हितानुबन्धिनः, तैः (उपपद०) अनु + बन्ध् + णिनि। तस्य ईहितम = उसका अभीष्ट, ईह् + क्त, चाहा हुआ। धातु: इव = स्पष्ट की (इच्छा) की तरह, प्रतीयते = जाना जाता है। प्रति + इ + लट्। अर्थात् सुयोधन क्या कार्य करना चाहता था, वह कार्य हो जाने पर उसके लोकोपकारी परिणाम से ही पता चलता है। इति।20।।